

डैनियल की पुस्तक - क्रमांक इक्कीस

माप में

Jeff Pippenger

2023-12-16

हम यशायाह अध्याय सत्ताईस का अध्ययन कर रहे हैं, क्योंकि यह यशायाह के आगे के अध्यायों के लिए संदर्भ स्थापित करता है। वे आगे के अध्याय अंतिम वर्षा को उचित बाइबिलीय पद्धति के रूप में पहचानते हैं। यह पद्धति, जब पहचानी और लागू की जाती है, तो भविष्यवाणी का वह संदेश प्रकट करती है, जो यदि स्वीकार किया जाए तो उसके अनुरूप अनुभव उत्पन्न करता है।

11 सितंबर, 2001 को वह गीत, जो परमेश्वर की पूर्व वाचा के लोगों, अर्थात् सातवें दिन के एडवेंटिस्ट लोगों, के लिए गाया जाना है, यह है कि उन्हें परमेश्वर की प्रजा के रूप में छोड़ दिया जा रहा है, क्योंकि उन्होंने वे फल नहीं उत्पन्न किए जो परमेश्वर ने अपनी दाख की बारी से उत्पन्न होने के लिए इच्छित किए थे। यह गीत वाचा-संबंध पर आधारित होना था, जिसका प्रतिनिधित्व उस दाख की बारी से होता है जिसे परमेश्वर ने लगाया था, और 1863 में ठोकर के पत्थर को उनके द्वारा अस्वीकार करने से भी। वे 1856 में लाओदिकिया बन गए थे, और सात वर्ष तक, या "सात बार", या पच्चीस सौ बीस दिनों तक, परमेश्वर प्रवेश चाहता रहा, पर उन्होंने 1863 में उसके सामने द्वार बंद कर दिया।

11 सितंबर, 2001 से, रविवार के कानून पर उसके मुख से पूरी तरह उगल दिए जाने की पूर्व-तैयारी के रूप में, वे गठरियों में बाँधे जा रहे हैं। 11 सितंबर, 2001 से एडवेंटवाद को जो संदेश गाया जाना है, वह लाओदिकिया का संदेश है, जो दाख की बारी का संदेश है जिसमें ठोकर का पत्थर शामिल है, जो उन सबको कुचल देता है जो अनमोल पत्थर को "देखना" और "चखना" से इनकार करते हैं। यशायाह के पद में लाओदिकियों के लिए प्रतिज्ञा यह है कि कोई भी एडवेंटिस्ट जो इस अंतिम चेतावनी को स्वीकार करना चुनता है, उसके पास अभी भी मसीह की "शक्ति" को "पकड़ लेने" का समय है, ताकि वे मसीह के साथ "शांति कर" सकें; क्योंकि मसीह अब भी उनसे "शांति करने" को तैयार है। परंतु आधी रात की पुकार पर, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से ठीक पहले, वह अवसर सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

उस अवधि में, जो 11 सितम्बर, 2001 को शुरू हुई, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि जो "बीते समय में लोग नहीं थे", उन्हें वह "सूखी भूमि से निकली हुई जड़" बनाएगा, ताकि वे "जड़ पकड़ें", "कली फूटें और फूल खिलें, और समस्त पृथ्वी का मुख फल से भर दें।" यिशै की जड़ में कली फूटने और फूल खिलने का कारण "पिछली वर्षा" है, क्योंकि जो जड़ कली फूटने और फूल खिलने वाली है, वह भविष्यवाणी के अनुसार उस ध्वज के रूप में नियत है जो ऊपर उठाया जाता है, और वह ध्वज यिशै की जड़ ही है।

और उस दिन यिशै की एक जड़ होगी, जो लोगों के लिये ध्वज के समान खड़ी होगी; उसी की खोज अन्यजातियाँ करेंगी; और उसका विश्राम महिमामय होगा। यशायाह 11:10।

अंतिम वर्षा के कारण, 11 सितंबर, 2001 से यिशै की जड़ में कली फूटने और फूल आने लगे, और शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय वह जड़ सारी पृथ्वी को फल से भर देगी। यशायाह अध्याय सत्ताईस में वर्णित रविवार का कानून वह क्रमिक इतिहास है, जो दानियेल की पुस्तक के अध्याय एक से तीन में भी दर्शाया गया है। जब 11 सितंबर, 2001 को जातियाँ क्रोधित हुईं—तीसरे 'हाय' के इस्लाम को पहले छोड़ा गया और फिर तुरंत रोक दिया गया—तब अंतिम वर्षा फुहारों के रूप में आरंभ हुई।

'उस क्लेश के समय का आरंभ,' यहाँ उल्लिखित, उस समय की ओर संकेत नहीं करता जब विपत्तियाँ उंडेली जानी शुरू होंगी, बल्कि उनके उंडेले जाने से ठीक पहले की एक छोटी अवधि की ओर संकेत करता है, जब मसीह पवित्रस्थान में हैं। उस समय, जब उद्धार का कार्य समापन पर होगा, पृथ्वी पर संकट आएगा, और राष्ट्र क्रोधित होंगे; फिर भी उन्हें इतना रोके रखा जाएगा कि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न आए। उसी समय 'अंतिम वर्षा,' अर्थात् प्रभु की उपस्थिति से आने वाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत की प्रबल वाणी को सामर्थ्य दे, और पवित्र जनों को इस हेतु तैयार करे कि वे उस काल में डटे रह सकें जब अंतिम सात विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी।" प्रारंभिक लेखन, 85.

इस अंश में बहन व्हाइट स्पष्ट कर रही हैं कि एक अल्प अवधि ऐसी है जब उद्धार का द्वार अभी भी खुला रहता है। वह जिस "संकट के समय" का उल्लेख कर रही हैं, वह उस "महान संकट के समय" से भिन्न है, जो तब आरंभ होता है जब अनुग्रह का समय पूरी तरह समाप्त हो जाता है। एडवेंटिज़्म में इसे उचित रूप से "छोटे संकट का समय" कहा जाता है, उस महान संकट के समय के संबंध में जो तब आरंभ होता है जब मीकाएल खड़ा होता है। "छोटा संकट का समय" उस अवधि का प्रतिनिधित्व करता है जब शीघ्र आने वाले "रविवार के कानून" के साथ राष्ट्रीय पतन आरंभ होता है, और यह तब तक चलता है जब तक अनुग्रह का समय समाप्त नहीं हो जाता।

11 सितंबर, 2001 से लेकर रविवार के कानून तक के इतिहास में, एडवेंटिज़्म की अंतिम शुद्धि और न्याय को 'अन्तिम वर्षा' के 'छिड़काव' के दौरान घटित होते हुए दर्शाया गया है। वह अवधि, जब अन्तिम वर्षा, जो 'ताज़गी' भी कहलाती है, 'छिड़काव' के रूप में आरम्भ होती है, परन्तु आगे बढ़ते-बढ़ते रविवार के कानून के समय उसके पूर्ण उंडेले जाने तक पहुँचती है। उस अवधि का आरम्भ तब होता है जब तीसरी 'विपत्ति' का इस्लाम राष्ट्रों को क्रोधित कर देता है; तब अन्तिम वर्षा गिरने लगती है, और कुछ लोग उस अन्तिम वर्षा को पहचानकर उसे ग्रहण करते हैं, और कुछ उसे पहचानते ही नहीं। कुछ लोग यह तो पहचानते हैं कि कुछ हो रहा है, पर वे नहीं समझते कि वह क्या है, और उसके विरुद्ध अपने आप को कड़ा कर लेते हैं।

बहुतों ने बहुत हद तक प्रारंभिक वर्षा को ग्रहण करने में असफलता पाई है। उन्होंने वे सब आशीषें नहीं पाईं जो परमेश्वर ने इस प्रकार उनके लिए प्रदान की हैं। वे अपेक्षा करते हैं कि जो कमी है वह अन्तिम वर्षा से पूरी हो जाएगी। जब अनुग्रह की सबसे प्रचुरता प्रदान की जाएगी, तब वे उसे ग्रहण करने के लिए अपने हृदय खोलने का इरादा रखते हैं। वे एक भयानक भूल कर रहे हैं। मनुष्य के हृदय में अपनी ज्योति और ज्ञान देकर परमेश्वर ने जो कार्य आरंभ किया है, वह निरंतर आगे बढ़ता रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता का बोध होना चाहिए। आत्मा के निवास के लिए हृदय को हर प्रकार की अशुद्धि से खाली कर शुद्ध किया जाना चाहिए। पाप के अंगीकार और त्याग, लगन भरी प्रार्थना, और स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पण के द्वारा ही प्रारंभिक चेलों ने पेन्टेकॉस्ट के दिन पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के लिए तैयारी की थी। वही कार्य, बस अधिक बड़े पैमाने पर, अब किया जाना चाहिए। तब मनुष्य को केवल आशीष माँगनी थी और उसके विषय में प्रभु द्वारा उस कार्य को सिद्ध करने की प्रतीक्षा करनी थी। कार्य परमेश्वर ने ही आरंभ किया है, और वही अपने कार्य को पूरा करेगा, यीशु मसीह में मनुष्य को सिद्ध बनाकर। पर प्रारंभिक वर्षा से अभिव्यक्त अनुग्रह की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। केवल वे ही जो उन्हें मिली हुई ज्योति के अनुसार जीते हैं, अधिक ज्योति प्राप्त करेंगे। यदि हम सक्रिय मसीही सद्गुणों के व्यावहारिक प्रदर्शन में प्रतिदिन प्रगति नहीं कर रहे, तो हम अन्तिम वर्षा में पवित्र आत्मा के प्रकट होने को पहचान नहीं पाएँगे। वह हमारे चारों ओर के हृदयों पर बरस रही होगी, पर हम न तो उसे पहचानेंगे और न ही ग्रहण करेंगे। सेवकों के लिए गवाहियाँ, 506, 507.

अंतिम वर्षा अब बरस रही है, और कुछ लोग उसे पहचानते हैं और इसलिए उसे ग्रहण करते हैं, और कुछ लोग उसे नहीं पहचानते, और इसलिए उसे प्राप्त नहीं करते। अंतिम वर्षा को प्राप्त करने के लिए उसका पहचाना जाना आवश्यक है। अंतिम वर्षा केवल एक अनुभव भर नहीं है; यह एक संदेश से उत्पन्न होने वाला अनुभव है, परंतु वह संदेश तभी प्राप्त किया जा सकता है जब उसे स्थापित करने के लिए सही पद्धति अपनाई जाए। उस पद्धति को पहचाने बिना जो अंतिम वर्षा के संदेश को स्थापित करती है, दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों में प्रतिपादित राज्यों के उदय और पतन में प्रस्तुत भविष्यसूचक शिक्षाओं को समझना लगभग असंभव है।

जो ध्वज संसार के सामने ऊँचा उठाया जाता है, उसे यशायाह "यिशै की जड़" के रूप में पहचानते हैं, और अध्याय सत्ताईस में जो "याकूब से उत्पन्न" हैं वे "जड़ पकड़ते" हैं। जो "यिशै की जड़" हैं, उन्हें वहाँ "इसाएल" भी कहा गया है, और वही पहले फूलते हैं और कलियाँ निकालते हैं, और उसके बाद संसार को फल से भर देते हैं। प्रकृति के नियम भविष्यवाणी के नियमों का खंडन नहीं करते, क्योंकि प्रकृति और भविष्यवाणी दोनों को उसी विधि-दाता ने रचा है। किसी पौधे के फल देने से पहले उसे सुषुप्तावस्था से बाहर आना होता है, जिसका प्रमाण पहले कलियों से और उसके बाद फूलों से मिलता है। आध्यात्मिक इसाएल, जो "यिशै की जड़" है, क्रमशः बढ़ती हुई वर्षा प्राप्त करता है। यह "फुहार" से शुरू होती है और जब उस ध्वज द्वारा प्रस्तुत फल से संसार भर जाता है, तब यह पूर्ण रूप से उंडेल दी जाती है।

यशायाह के सत्ताईसवें अध्याय में, वर्षा की बौछार का आरंभ तब दर्शाया गया है जब कोपलें "फूटती हैं।" जब वे पहली बार "फूटती हैं," तब वर्षा को "माप के अनुसार" उंडेला जाना पहचाना गया है। "माप के अनुसार, जब वह फूटती है।" 11 सितंबर, 2001 को अंतिम वर्षा की बौछार "माप के अनुसार" उंडेली जाने लगी, क्योंकि उस समय गेहूँ और खरपतवार, या बुद्धिमान और मूर्ख, अभी भी आपस में मिश्रित थे।

"परमेश्वर का आत्मा की वह महान उंडेली, जो अपनी महिमा से समस्त पृथ्वी को प्रकाशित करती है, तब तक नहीं आएगी जब तक हमारे पास ऐसे प्रबुद्ध लोग न हों जो अनुभव से जानते हों कि परमेश्वर के साथ सहकर्मियों होना क्या अर्थ रखता है। जब हम मसीह की सेवा के लिए पूर्ण, पूरे मन से समर्पण कर देंगे, तब परमेश्वर इस तथ्य की पुष्टि अपनी आत्मा को बिना माप उंडेलकर करेगा; परन्तु यह तब तक नहीं होगा जब तक कलीसिया का सबसे बड़ा भाग परमेश्वर के साथ सहकर्मियों नहीं बन जाता। जब स्वार्थ और भोग-लिप्सा इतनी प्रकट हों, जब ऐसी मनोवृत्ति प्रबल हो कि, यदि उसे शब्दों में बांधा जाए, तो वह कैन के उस उत्तर को ही व्यक्त करे—'क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?'—तब परमेश्वर अपनी आत्मा नहीं उंडेल सकता। यदि इस समय का सत्य, यदि चारों ओर गहराते वे चिन्ह जो यह प्रमाणित करते हैं कि सब बातों का अंत निकट है, उन लोगों की सुप्त ऊर्जा को, जो सत्य को जानने का दावा करते हैं, जागृत करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, तो जो प्रकाश अब तक चमक रहा है, उसके अनुरूप अंधकार इन आत्माओं को घेर लेगा। अंतिम लेखा-जोखा के महान दिन में अपनी उदासीनता के लिए वे परमेश्वर के सामने जरा-सा भी बहाना प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे। यह बताने के लिए कि वे परमेश्वर के वचन के पवित्र सत्य के प्रकाश में क्यों नहीं जीए, चले और काम किए, और इस प्रकार अपने आचरण, अपनी सहानुभूति और अपने उत्साह के द्वारा पाप से अंधकारमय संसार के सामने यह क्यों न प्रकट किया कि सुसमाचार की शक्ति और वास्तविकता का खंडन नहीं किया जा सकता—उनके पास कोई कारण प्रस्तुत करने को न होगा।"

Review and Herald, 21 जुलाई, 1896.

यशायाह अध्याय सत्ताईस अंतिम वर्षा के उंडेले जाने की शुरुआत के इतिहास को दर्शाता है—जब जड़ सूखी भूमि से अंकुरित होती है—और फिर तब तक, जब तक पृथ्वी फल से भर नहीं जाती। यह अध्याय बताता है कि "माप के अनुसार, जब वह अंकुरित होती है, तब तू उससे वाद-विवाद करेगा।" जब अंतिम वर्षा को "छिड़काव" के रूप में मापा जा रहा हो, बहन व्हाइट कहती हैं कि अंतिम वर्षा "हमारे चारों ओर हृदयों पर गिर रही हो सकती है, परंतु हम न तो उसे पहचानेंगे और न ही उसे ग्रहण करेंगे।"

ऐसा करते हुए वह एक ऐसी कलीसिया की पहचान करती है, जिसमें वर्षा के बरसने को पहचानने वाले और न पहचानने वाले, दोनों प्रकार के लोग मिले-जुले हैं। पिछले खंड में वह यह स्पष्ट करती है कि जब परमेश्वर उत्तरकालीन वर्षा को बिना माप उंडेलता है, तो यह इस बात का संकेत होता है कि अब बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियों का मिश्रण नहीं रहा; वह यँ कहती है, "जब हम मसीह की सेवा के लिए पूर्णतया, पूरे मन से समर्पित होंगे, तो परमेश्वर अपने आत्मा को बिना माप उंडेलकर इस तथ्य को स्वीकार करेगा; परन्तु यह तब तक नहीं होगा, जब तक कलीसिया का अधिकांश भाग परमेश्वर के सहकर्मियों नहीं बन जाता।"

कलीसिया का बड़ा भाग, अर्थात् अधिकांश, मत्ती अध्याय पच्चीस में मूर्ख कुँवारियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि बाइबिल के अनुसार "बहुत से" बुलाए जाते हैं, पर "थोड़े" चुन लिए जाते हैं। बुद्धिमानों और मूर्खों को ईश्वरीय

प्रबंध के द्वारा आधी रात के संकट में अलग कर दिया जाता है, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से पहले होता है। यह विभाजन ऐसे लोगों को उत्पन्न करता है जो तब पश्चात् वर्षा में आत्मा का पूर्ण उंडेला जाना प्राप्त कर सकते हैं और "एक ही दिन में जन्मी हुई जाति" बन जाते हैं। तब यिश्ई की जड़ एक ध्वज के रूप में ऊँचा उठाई जाएगी और संसार को फल से भर देगी।

यशायाह सत्ताईस यह बताता है कि जब 11 सितंबर, 2001 को "माप में" अंतिम वर्षा उंडेली जाने लगी, तब "तू उससे वाद-विवाद करेगा।" "माप में, जब वह अंकुरित होता है, तब तू उससे वाद-विवाद करेगा।" 11 सितंबर, 2001 की घटना संसार और कलीसिया में तुरंत ही एक बहस बन गई। आज तक—बीस से अधिक वर्ष बाद—अब भी ऐसे तर्क हैं जो उन घटनाओं को इस्लाम की कार्रवाई ठहराने का विरोध करते हैं, और इसके बजाय उन्हें किसी वैश्विकतावादी षड्यंत्र का रूप मानते हैं। अंतिम वर्षा की बौछार के आगमन से संबंधित बहस 11 सितंबर, 2001 को शुरू हुई, पर संसार में चल रही बहस परमेश्वर के भविष्यवाणीपूर्ण वचन में पहचानी गई "बहस" नहीं है। बहस उन भविष्यवाणियों के बारे में है, जैसी कि आगे दी गई है।

एक अवसर पर, जब मैं न्यूयॉर्क शहर में था, रात्रि के समय मुझे आकाश की ओर मंज़िल पर मंज़िल उठती इमारतें देखने के लिए बुलाया गया। इन इमारतों के अग्निरोधी होने की गारंटी दी गई थी, और उन्हें उनके मालिकों और निर्माताओं की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए खड़ा किया गया था। ये इमारतें ऊँची और उससे भी ऊँची उठती गईं, और उनमें सबसे महँगी सामग्री का उपयोग किया गया। जिनके ये भवन थे, वे अपने आप से यह नहीं पूछ रहे थे: 'हम परमेश्वर की महिमा सर्वोत्तम रूप से कैसे करें?' प्रभु उनके विचारों में नहीं था।

"मैंने सोचा: 'हाय, काश जो लोग इस प्रकार अपने साधनों का निवेश कर रहे हैं, वे अपने मार्ग को कैसे देख पाते जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं! वे भव्य इमारतें खड़ी कर रहे हैं, पर ब्रह्मांड के शासक की दृष्टि में उनके मनसूबे और योजनाएँ कितनी मूर्खतापूर्ण हैं। वे हृदय और मन की सारी शक्तियों से यह नहीं विचार कर रहे कि वे परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकते हैं। वे इस बात को, जो मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है, भुला चुके हैं।'"

जब ये ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी हो रही थीं, तो मालिक महत्वाकांक्षी गर्व के साथ इस बात पर आनंदित थे कि उनके पास इतना धन है कि उसे अपने स्वार्थ की तृप्ति में और अपने पड़ोसियों में ईर्ष्या भड़काने में खर्च कर सकें। जिस धन को उन्होंने इस प्रकार लगा दिया, उसका बहुत-सा भाग ज़बरदस्ती की वसूली से, गरीबों को पिसाकर प्राप्त किया गया था। वे यह भूल गए कि स्वर्ग में हर व्यापारिक लेन-देन का लेखा रखा जाता है; हर अन्यायी सौदा, हर धोखाधड़ी वहाँ दर्ज होती है। समय आ रहा है जब अपने छल और उदंडता में मनुष्य ऐसी सीमा तक पहुँचेंगे जिसे प्रभु उन्हें पार करने नहीं देंगे, और वे जानेंगे कि यहोवा की सहनशीलता की भी एक सीमा है।

"मेरे सामने अगला जो दृश्य आया, वह आग लगने का अलार्म था। लोगों ने ऊँची और कथित रूप से अग्निरोधक इमारतों की ओर देखा और कहा: "वे बिल्कुल सुरक्षित हैं।" लेकिन ये इमारतें ऐसे भस्म हो गईं मानो वे तारकोल से बनी हों। दमकल की गाड़ियाँ इस विनाश को रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर सकीं। दमकलकर्मी इंजनों का संचालन करने में असमर्थ थे।" टेस्टिमोनीज़, खंड 9, 12, 13.

एडवेंटिस्ट कलीसिया ने 11 सितंबर, 2001 के तुरंत बाद ऐसे अंशों को दुनिया से छिपाने की कोशिश की। यह न्यूयॉर्क सिटी और उन बेहद ऊँची इमारतों के बारे में कैसे नहीं हो सकता, जिनमें लगी आग पर दमकल की गाड़ियाँ काबू नहीं पा सकीं? ऐसी पूर्ति के बाद, एडवेंटिस्ट कलीसिया जिन रचनाओं को एक भविष्यवक्त्री द्वारा लिखा हुआ मानती है, उनमें से ऐसे अंश को छतों से कैसे नहीं घोषित किया गया?

अंतिम वर्षा की फुहारों का आगमन, जो भविष्यसूचक 'बहस' के आगमन को चिह्नित करता है, एडवेंटवाद के अंतिम विद्रोह की भी पहचान कराता है; क्योंकि वही वे, जिसे वे शेष जन के लिए भविष्यवक्त्री के रूप में पहचानते हैं, उसके स्पष्ट और सरल शब्दों को पूरी तरह अस्वीकार कर देते हैं।

"शैतान... सत्य से दूर ले जाने के लिए निरंतर मिथ्या की घुसपैठ कराता रहता है। शैतान का अन्तिमतम छल यह होगा कि वह परमेश्वर के आत्मा की गवाही को निष्प्रभावी कर दे। 'जहाँ दर्शन नहीं होता, वहाँ लोग नाश होते हैं' (नीतिवचन 29:18)। शैतान चतुरतापूर्वक, भिन्न-भिन्न रीति से और विभिन्न माध्यमों द्वारा, सच्ची गवाही में परमेश्वर की शेष प्रजा के विश्वास को अस्थिर करने के लिए कार्य करेगा।"

"साक्ष्यों के विरुद्ध एक शैतानी घृणा भड़काई जाएगी। शैतान का प्रयत्न यह होगा कि वह उनमें कलीसियाओं के विश्वास को अस्थिर कर दे, क्योंकि यदि परमेश्वर का आत्मा जो चेतावनियाँ, भर्त्सनाएँ और परामर्शों देता है, उन पर ध्यान दिया जाए, तो अपने छल को भीतर लाने और आत्माओं को अपनी भ्रांतियों में बाँध देने के लिए उसे इतना स्पष्ट मार्ग नहीं मिल सकता।" Selected Messages, पुस्तक 1, पृ. 48.

भविष्यवाणी के अनुसार गेहूँ और खरपतवार दोनों को बाँधने का कार्य 11 सितंबर, 2001 को भविष्यवाणी की आत्मा के विरुद्ध विद्रोह के साथ शुरू हुआ, जिसने 1863 में बाइबल के विरुद्ध शुरू हुए क्रमिक विद्रोह के समापन को चिह्नित किया।

"हम एक समुदाय के रूप में यह दावा करते हैं कि हमारे पास पृथ्वी के अन्य सभी लोगों से बढ़कर सत्य है। तब हमारा जीवन और चरित्र ऐसे विश्वास के अनुरूप होना चाहिए। वह दिन अब निकट ही है जब धर्मी स्वर्गीय कोठार के लिए बहुमूल्य अन्न की तरह गठुओं में बाँधे जाएँगे, जबकि दुष्ट जंगली घास के समान उस अंतिम महान दिन की आग के लिए इकट्ठे किए जाएँगे। परन्तु गेहूँ और जंगली घास 'कटनी तक साथ-साथ उगते हैं।'" Testimonies, volume 5, 100.

एडवेंटिज़्म उस निम्नलिखित अंश को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकता है, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इन इमारतों के ढह जाने पर प्रकाशित-वाक्य 18:1-3 की पूर्ति होगी?

"क्या अब यह कहा जा रहा है कि मैंने यह घोषित किया है कि न्यूयॉर्क को एक ज्वारीय तरंग बहा ले जाएगी? यह मैंने कभी नहीं कहा। मैंने तो, वहाँ एक के ऊपर एक मंजिल चढ़ती हुई महान इमारतों को उठते देखते हुए, कहा है, 'जब प्रभु पृथ्वी को भयंकर रीति से हिलाने के लिए उठ खड़ा होगा, तब कितने भयानक दृश्य घटित होंगे! तब प्रकाशितवाक्य 18:1-3 के वचन पूरे होंगे।' प्रकाशितवाक्य का समूचा अठारहवाँ अध्याय पृथ्वी पर आनेवाली बातों के विषय में एक चेतावनी है। परन्तु न्यूयॉर्क पर क्या आनेवाला है, इस विषय में मुझे कोई विशेष ज्योति नहीं दी गई है; केवल यह मैं जानती हूँ कि एक दिन वहाँ की महान इमारतें परमेश्वर की शक्ति के उलट-पलट से ढहा दी जाएँगी। प्राप्त ज्योति से मुझे ज्ञात है कि संसार में विनाश विद्यमान है। प्रभु का एक वचन, उसकी पराक्रमी शक्ति का एक स्पर्श, और ये विशालकाय संरचनाएँ गिर पड़ेंगी। ऐसे दृश्य घटित होंगे, जिनकी भयावहता की हम कल्पना भी नहीं कर सकते।" Review and Herald, 5 जुलाई, 1906.

यहाँ हम जिस मुद्दे को संबोधित कर रहे हैं, वह यह नहीं है कि ये पद 11 सितंबर, 2001 को पूरे हुए थे या नहीं—क्योंकि वे निश्चित रूप से हुए थे—बल्कि हमारा उद्देश्य उस "बहस" को संबोधित करना है जिसकी शुरुआत उसी समय हुई। यह बहस सही या गलत पद्धति को लेकर थी। एडवेंटिस्ट कलीसिया ने 1863 में विलियम मिलर की भविष्यवाणी-व्याख्या के चौदह नियमों को अस्वीकार करना शुरू किया, और वे अब इस हद तक पहुँच गए हैं कि आप एडवेंटिस्ट धर्मशास्त्रियों द्वारा लिखी गई बाइबिल अध्ययन की कोई ऐसी पुस्तक नहीं खरीद सकते जिसे पतनशील प्रोटेस्टेंटवाद और रोमन कैथोलिकवाद के धर्मशास्त्रियों द्वारा बार-बार समर्थन न मिला हो। 1863 से 2001 तक, और आज भी, विलियम मिलर के भविष्यवाणी-व्याख्या के नियमों द्वारा मूल रूप से प्रस्तुत की गई पद्धति को रोमन कैथोलिकवाद और पतनशील प्रोटेस्टेंटवाद की पद्धति के पक्ष में एक ओर रख दिया गया। जब प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के पद एक से तीन पूरे हुए, तब जो भविष्यवाणी की "बहस" शुरू हुई, वह सही या गलत पद्धति को लेकर थी।

हम यशायाह के अध्याय सत्ताईस की "बहस" की विवेचना अगले लेख में जारी रखेंगे।

“हमें स्वयं यह जानना चाहिए कि ईसाई धर्म का सार क्या है, सत्य क्या है, वह विश्वास क्या है जो हमने प्राप्त किया है, बाइबल के नियम कौन-से हैं—वे नियम जो हमें सर्वोच्च अधिकार द्वारा प्रदान किए गए हैं।” The 1888 Materials, 403.